675
1790
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1360/70/71

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 6750

19-1

891.431
Sh23R

504

675

राष्ट्रीय पद्य-मञ्जरी ।

संग्रहकर्त्ता—

मुकामा निवासी

हरिनन्दन सिंह शर्म्मा ।

"जिसको न निज गौरव तथा निज देशका अभिमान है ।
वह नर नहीं नर-पशु निरा है और मृतक समान है ॥"

(सर्व्वाधिकार सुरक्षित)

बजरङ्गसहाय सिंह, मैनेजर, द्वारा
सेन्ट्रल प्रिन्टिङ्ग प्रेस, मुरादपुर, पटनामें
मुद्रित ।

सम्वत् १९७९

पहलीवार १००० प्रतियाँ] [मूल्य १ आना ।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 675
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

माताकी वन्दना ।

ऐ मातृभूमि ! तेरे चरणोंमें शिर नवाऊँ ।
मैं भक्ति भेंट अपनी तेरी शरणमें लाऊँ ॥ऐ मातृ०॥
माथे पै तू हो चन्दन, छाती पै तू हो माला,
जिह्वा पै गीत तू हो, मैं तेरा नाम गाऊँ ॥ऐ मातृ०॥
जिससे सपूत उपजे श्री राम कृष्ण जैसे,
उस तेरी धूलको मैं निज शीश पै चढ़ाऊँ ॥ऐ मातृ०॥
मानी समुद्र जिसकी धूलीका पान करके,
करता है मान तेरे उस पैरको मनाऊँ ॥ऐ मातृ०॥
वे देश मानवाले चढ़कर उतर गये सब,
गोरे रहे न काले, तुझको ही एक पाऊँ ॥ऐ मातृ०॥
सेवामें तेरी सारे भेदोंको भूल जाऊँ,
वह पुण्य नाम तेरा प्रतिदिन सुनू सुनाऊँ ॥ऐ मातृ०॥
तेरा ही मन्त्र गाऊँ, तेरे ही काम आऊँ,
मन और देह तुझपर बलिदान मैं चढ़ाऊँ ॥ऐ मातृ०

गज़ल ।

अल्लाह नामवालो ! सुन लो कथा हमारी ।
मसज़िदके तुम हो बन्दे, मन्दिरके हम पुजारी ॥१॥
हैं नाम उसके कितने, पर एकही खुदा है ।
हज़रत हुसैन वही थे बंशी थी जिसकी प्यारी ॥२॥

वह करबलामें आया, गोकुलमें भी वही था।
गीता बनाई उसने जिसकी अज़ाँ है जारी ॥३॥
कुरान है जो उसका, तो वेद भी उसीका।
प्रीतम न फ़र्क समझो, दुनियां उसीकी सारी ॥४॥

गज़ल।

बने मन्दिरमें अब मस्जिद यही इच्छा हमारी है।
अज़ाँ भी शङ्खसे निकले यही अब दिलमें धारो है॥
मुसल्माँ कृष्णको सुमिरें तो हिन्दू अब मुहम्मद को।
बने क़ाबेमें बुतख़ाना इसीसे फ़ैज़ भारी है॥
निछावर हों मदीनेपर सभी हिन्दूका तन मन धन।
मुसल्माँ समझ लें दिलमें कि यह काशी हमारी है॥
सभी हिन्दू पढ़ो कलमा मुसल्मां राम कह डालो।
कहै प्रीतम न अब झगड़ो गले मिलनेकी बारी है॥

गज़ल।

क़ानून भङ्गका हिन्दमें अब बोलबाला हो गया।
देख ले दुश्मन तेरा अब मुंह भी काला हो गया॥
मान सकते हैं नहीं हम हुक्म तेरे अब कोई।
एक सौ चौआलीस दफ़ाका अब दिवाला हो गया॥
कैद करके अब हमें तुम ले चलोगे किस जगह।
कैदखाना भी हमें मस्जिद शिवाला हो गया॥

जान सकते हो नहीं तुम मेरे गान्धी के शान।
आसमाँ भी अब उन्हें मकड़ीका जाला हो गया॥

गज़ल।

दीन ईमानकी आंखोंका है तारा शौक़त।
वतनके वास्ते गये जेल दोबारा शौक़त॥
माने उनको यों कहा खुश होकर ऐ बेटा।
हिन्दमें जाकरके करो नाम हमारा शौकत॥
दोनों भाई मिलकर काम तुम ऐसा करना।
भला हो देशका अंजाम तुम्हारा शौकत॥
हिन्दू भाई हैं उन्हें भी सङ्ग रखना।
भाई भाईमें मेल रहे हाँरे तुम्हारा शौकत॥
जेल क्या चीज है गर जान भी दे देना हो।
क़ौमके वास्ते न करना गवारा शौक़त॥
दिखा दो ग़ैरोंको अपनी जबांमर्दी तुम।
पिया है दूध अगर तुमने हमारा शौकत॥

बहरे तबील।

भारत-माताकी इज्जत बढ़ा देना जी,
जेलखानोंसे दिलको लगा देना जी।
अपने खद्दर-स्वदेशीसे तनको छिपा,
मैनचेस्टरके रौनक मिटा देना जी।

जबां-बन्दी करे सभा-बन्दी करे,
करे कानून जारी, फिकर ही नहीं।
चाहे शूलीका हुक्म दे तुमको सुना,
कभी पगको न पीछे हटा लेना जी।
एस०डी०ओ० जो तुमपर चलावे दफा,
कभी हरगीज न उसमें सफाई भी दो।
जेल रहनेमें तुमको जो तकलीफ दे,
कृष्णभूमि समझ उसको सह लेना जी।
स्वर्ग जाकर मदनसे जो मुलाकात हो,
तो यह कहना तिलक-गोखले हैं कहाँ।
उनके पैरोंपर मस्त झुकाकर कहो,
जरा भारतपर दृष्टि लगा देना जी।

—— ——

गज़ल।

तूने गर ठान लिया जुर्म ही करनेके लिए।
हम भी तैयार हैं अब जीसे गुज़रनेके लिए॥
अब नहीं है हिन्द वह जिसको दबा बैठे थे।
जाग उठे निन्दसे हा! हम तो सम्हलनेके लिए॥
हाय! भारतको किया तूने है गारत कैसा।
लूटकर तो छोड़ दिया हमको तो मरनेके लिए॥
भीख मंगवाई है हमें दरदर हमें भूखा मारा।
हिन्दका माल विलायतको ही भरनेके लिए॥

लाजपत, गांधी वो शौकतका बजाकर डंका ।
सीना खोले हैं खड़े गोलियां खानेके लिये ॥
तोप चरखे की बनाकर तुम्हें मारेंगे हम ।
अब न छोड़ेंगे तुम्हें फिर भी उभड़नेके लिए ॥
दास, शौकत वो मुहम्मदको बना कर कैदी ।
छेड़ा है हिन्दको अब सामना करनेके लिए ॥
बच्चेसे बूढ़ेतक आज हैं तैयार सभी ।
डाल दो हथकड़ियां जेलको भरनेके लिए ॥
उठो, आओ, चलो, फ़ौजमें भर्ती हो लो ।
भारतभूमिका भी तो कुछ काम करनेके लिए॥
खाँसाहब और रायबहादुरकी पदवी लेकर ।
जी हुजूर और गुलामी ही है करनेके लिए ॥
ईश्वरसे प्रार्थना करता है यही आज 'वहीद' ।
शक्ति हो जाय हमें देशपर मरनेके लिए ॥

गज़ल ।

तुम्हें ख़ौफ लार्ड रीडिंग, हमें डर है पेशवाका ।
तुम्हें जोश बादशाही, हमें आसरा खुदाका ॥
हैं रसूल मेरे हामी के उन्हींका है यह ख़िलाफत ।
वही देंगे फ़तह तुम पर कहे नीचा सर ज़फा कर ॥
हमें क़ैदहीमें डालो हमें बेड़ियाँ पिन्हा दो ।
हमें भूखा मार डालो यही हुक्म है खुदाका ॥

जलियानवाला बाग़ अब नहीं भूल सकते हम सब ।
नक़शा खिंचा हुआ है मैदान करबलाका ॥
अय पुलिसके मुलाजिम न बनो तुम इतने ज़ालिम ।
न बिगाड़ो दीन अहमद करो खौफ़ कुछ खुदाका ॥
उठो हिन्दुओ ! मुसल्मां करो मिलके सब वो सामा ।
के रहनेही न पावें जो हैं सामने जफ़ाका ॥

गवर्नमेंटकी रफ्तार ।

तबदील गवर्नमेंटकी रफ्तार न होगी ।
गर क़ौम असहयोग पै तैयार न होगी ॥
बन जायँगे हर शहरमें जलियां वाले बाग़ ।
इस मुल्कसे गर दूर यह सरकार न होगी ॥
दुश्मनको असहयोगसे हम ज़ेर करेंगे ।
इन हाथोंमें बन्दूक ओ तलवार न होगी ॥
ये जेलख़ाने टूट कर अब और बनेंगे ।
इनमें तमाम क़ौम ग़िरफ्तार न होगी ॥
वह कौन असीरे वतन है जो आयगा जिसपर ।
हँस-हँसके फ़िदा जेलकी दीवार न होगी ॥
हम भारतोय हैं दे दो हमें लोहेकी बेड़ियाँ ।
सोनेके ज़ेवरोंमें यह झनकार न होगी ॥
जब तक कि इसे खूनसे सींचेंगे नहीं हम ।
खेती वतन की दोस्तो ! गुलज़ार न होगी ॥
हम ऐसी हुकूमतको मिटा देंगे मुज़तरीम ।
ग़ममें हमारे जो कभी ग़मख्वार न होगी ॥

(गया-कांग्रेसमें गाया हुआ)

हुआ सरदार गांधी है।

हमारी क़ौमने माना हुआ सरदार गांधी है;
हमारे क़ाफ़िले का क़ाफ़िला-सरदार गांधी है।
गुंजाया है ज़मानेमें अजब ललकार गांधी है;
नहीं डरता हूँ दुश्मनसे मेरी सरकार गांधी है।

× × × ×

बसे हुए घर उजड़ रहे हैं; उजाड़ गुलशन बने हुए हैं।
सिखाकर सत्याग्रह हमको; दिखाया है यह दुनियांको;
जमाया जेलमें डेरा और छोड़ा घर बार गांधी है।
हमारी क़ौमने माना हुआ सरदार गांधी है।

(गया-कांग्रेसमें गाया हुआ)

भारतदेश हमारा प्यारा।

भारतदेश हमारा प्यारा।
रटन पड़न है लोगन सारा, मतभेद मतंग गजसे मत कचरो;
दिन रैन दो बस अब एक उजाला, राम रहीम है एक पसारा।
स्वराज्य मन्त्रके पिता तिलकको, ऐक्य पिण्ड अब देय गयामें;
महात्माजी करत पुकारा, शान्त करो अब खलबल सारा।
दासपनेसे दास छुड़ाओ, दासहिं बनके हिन्दका सारा;
निशा निराशमें दिखती है; स्वराज्य-अरुणोदयकी आशा।
बिट्ठल भगिनी चाहे ऐसा, सहकार न हो किसीको प्यारा;
भारतदेश हमारा प्यारा।

सेन्ट्रल प्रिन्टीङ्ग प्रेस, मुरादपुर, पटना।